

तकनीक से उपलब्ध साधनों का दुरुपयोग अशांति तनाव का कारण

इंदौर। अभियंताओं और वैज्ञानिकों के लिये ज्ञानशिखर काम्पलेक्स में 'स्वस्थ विचार सुंदर संसार' विषय पर एक त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसे सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय निदेशक

उसके जीवन से सुख-शांति नहीं रही। विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने तो सुख के साधन बनाये लेकिन इसके अनुचित उपयोग से मनुष्य ने अपने लिये स्वयं ही अशांति पैदा की है। जैसी मनुष्य की वृत्ति होती है वैसी ही उसकी कृति

उपलब्ध हैं पर उन्हें अमल में लाना महत्वपूर्ण है। यह इस संस्था के प्रबंधकों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत संचार निगम के जनरल मैनेजर जी.सी.पाण्डे ने कहा कि टेक्नोलॉजी ने आदमी की कल्पना शक्ति को कम कर दिया



झालावाड़। अंतर्राष्ट्रीय तंबाकु निषेध दिवस पर 'व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी' समझाते हुए ब्र.कु.मीना।



जबलपुर। महावीर कालोनी में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.विमला, ब्र.कु.विनिता, पप्पु जैन तथा अन्य।



उज्जैन। नगर निगम द्वारा आयोजित विष्णुसागर झील के पुनरूद्धार में श्रमदान के पश्चात् समूह चित्र में हैं नगर निगम के अध्यक्ष सोनु गेहलोद, ब्र.कु.उषा तथा अन्य ब्र.कु.भाई-बहनें।



रामबाग, इंदौर। मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के खिलाड़ियों को 'सकारात्मक चिंतन' विषय पर व्याख्यान देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं कोच समीर, ब्र.कु.छाया, ब्र.कु.चंद्रमल एवं समस्त खिलाड़ी।



टिकरापारा। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' में बच्चों को स्वस्थ रहने की विधि समझाते हुए ब्र.कु.समीक्षा।



बूंदी, राजस्थान। जयस्थल गीता पाठशाला में 'प्लेटिनम जुबली' पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.कमला।



इंदौर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु.ओमप्रकाश, मुख्य अभियंता विजय तिवारी, भारत संचार निगम के जनरल मैनेजर जी.सी.पाण्डे, ब्र.कु.माधुरी, ब्र.कु.भावना तथा उपस्थित हैं वरिष्ठ अभियंता एवं साईसटिस्ट।

ब्र.कु.ओमप्रकाश ने कहा कि आज सारा विश्व दो भागों में बंटा हुआ है एक विकसित देश और दूसरा विकासशील देश। विकास की मान्यता व्यापार, उद्योग, विज्ञान एवं तकनीक से है। आज मनुष्य ने विज्ञान एवं तकनीक के आधार पर हर क्षेत्र में व्यापक तरक्की की है और मानव सभता के लिये सुख सुविधाओं के लिए अनेक साधन जुटाये हैं। परन्तु इतना विकास करने के बाद भी व्यक्ति के जीवन में तनाव, चिंता व अशांति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण है कि मनुष्य ने हर क्षेत्र में विकास तो किया लेकिन वह आध्यात्मिकता से दूर हो गया। जिसके कारण उसका जीवन असंतुलित हो गया और

होती है। अतः आज आवश्यकता है नैतिक, भौतिक और आध्यात्मिक विकास के समन्वय की तथा मनुष्य की सोच में परिवर्तन लाने की। आज जितने भी युद्ध हुए हैं या जो भी आविष्कार हुए हैं वह मन की कल्पना के कारण ही तो हुए हैं। अतः स्वस्थ मन, व्यक्ति के जीवन को, परिवार को और विश्व को सहज ही बदल सकता है और सुंदर संसार का निर्माण कर सकता है। अब भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक प्रगति की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

म.प्र.पावर ट्रांसमिशन, जबलपुर के मुख्य अभियंता विजय तिवारी ने कहा कि आज स्वस्थ विचारों के ऊपर बहुत सी पुस्तकें

हैं। जबकि राजयोग के द्वारा हम इसे बढ़ा सकते हैं। ब्र.कु.माधुरी ने कहा कि नव विश्व के निर्माण में इंजीनियर्स एवं वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण दायित्व है। उन्होंने राजयोग के विषय में जानकारी देते हुए सभी को संकल्पित कराया कि इस शिविर का पूरा लाभ लेते हुये इस संसार को सुंदर बनाने में पूरा-पूरा सहयोग देंगे। ब्र.कु.आस्था ने मंच का कुशल संचालन करते हुये परमात्मा को परम वैज्ञानिक और सर्वश्रेष्ठ अभियंता बताया और कहा कि उनसे अपना सम्बन्ध जोड़कर हम अपने जीवन को खुशनुमा बना सकते हैं जो इस कार्यक्रम का उद्देश्य भी है। ब्र.कु.हेमलता ने सभी आमंत्रित अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट की।

विपरीत परिस्थितियों में भी विजयी बनाती है-शक्तिशाली मनसा

रायपुर, शांतिसरोवर। मन में सकारात्मक विचारों का चिन्तन उमंग-उत्साह, खुशी व शक्ति की अनुभूति कराता है। इसलिए मन को सदा शुद्ध विचारों से समृद्ध बनाना होगा ताकि हमें तनाव की महसूसता भी न हो।

उक्त विचार रायपुर के पुलिस महानिरीक्षक आनन्द तिवारी ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि शक्तिशाली मन वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी शांत व स्थिर रहकर समस्याओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

इंदौर की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.पूनम ने कहा कि समाज में बढ़ते तनाव और अशांति का मूल कारण कहीं न कहीं हमारी आधुनिक जीवनशैली है। उन्होंने कहा कि तनाव से बचने के लिए हमें हर परिस्थिति में खुश रहने की कला सीखनी होगी और राजयोग मेडिटेशन का निरंतर अभ्यास कर हमें अपने मन को शक्तिशाली बनाना होगा। जिस प्रकार किसी महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए हम योजनाएं बनाते हैं। उसी प्रकार तनाव से बचने के लिए हमें अपनी जीवनशैली को बदलने की योजना बनानी होगी। हमें सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि तनाव क्यों होता है और

उसका मुख्य कारण क्या है? तब हमें पता चलता है कि तनाव का मुख्य कारण हमारे मन में उठने वाले नकारात्मक विचार हैं।

उन्होंने शुभ-भावनाओं के महत्व को बताते हुए कहा कि आज संसार में शुभ भावना

कैलिफोर्निया में हुई रिसर्च के अनुसार संसार में जितने भी व्यक्ति धूम्रपान तथा शराब का सेवन करते हैं वही हृदय रोग के सबसे ज्यादा रोगी बनते हैं और उससे भी अधिक दूषित भावनाओं और ईर्ष्या की भावनाओं के कारण रोगी बनते



'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पुलिस महानिरीक्षक आनन्द तिवारी, ब्र.कु.पूनम, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.कमला, ब्र.कु.सविता।

की बेहद कमी हो गई है। जिस प्रकार विश्व में अनेक दिवस मनाये जाते हैं उसी प्रकार शुभभावना दिवस मनाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार चिकित्सा विज्ञान में होम्योपैथी, एलोपैथी का महत्व है उसी प्रकार अध्यात्म में सम्बन्धों में मधुरता लाने के लिए एक-दूसरे के प्रति सिमपैथी (शुभ भावना) का महत्व है।

हैं। ऐसी दूषित भावनाएं ही कैसर व हृदयरोग का कारण बनती हैं। तो क्यों न हम अपने मन में सबके प्रति शुभ भावना रखें। इससे हमारे सम्बन्ध में भी मधुरता आयेगी एवं स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। उन्होंने बताया कि मेडिकल साइन्स ने तो शुभ भावनाओं को हीलिंग मेडिसीन के रूप में भी स्वीकार कर लिया है।